International Journal of Applied Research 2015; 1(7): 83-89

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(7): 83-89
www.allresearchjournal.com
Received: 23-04-2015
Accepted: 26-05-2015

अवधेश कुमार
शोध-छात्र-संस्कृत विभाग, दिल्ली
विश्वविद्यालय दिल्ली-110007

Correspondence:
अवधेश कुमार
शोध-छात्र-संस्कृत विभाग, दिल्ली
विश्वविद्यालय दिल्ली-110007

पणिनीय धातुपाठ की धातुओं में ध्वनिपरिवर्तन का कारण - गुणीय अपश्रुति

अवधेश कुमार

पाणिनि के अनुसार जब इ उ ऋ तथा लृ ध्वनियाँ ए ओ अर् तथा अल् में परिवर्तित होती हैं तो वहां गुण होता है। यथा आद्गुणः (अ. 6.1.84) उरण् रपरः (अ.1.1.50) इसी को भाषा वैज्ञानिकों ने टवूमस ळतंकंजपवद कहा है। यह दो प्रकार है, गुणात्मक, मात्रात्मक। यहां धातुओं में गुणीय अपश्रुति के कारण हुए ध्वनि परिवर्तन को प्रस्तुत किया जा रहा है।

इ	ए
इष आभीक्ष्ण्ये (क्र्या0 56)	एषृ गतौ (भ्वा. 412)
इष गतौ (दि.19)	एषृ प्रतियत्ने (मा. धा भवा. 399)
इषु इच्छायाम् (तु. 61)	
ञिइन्धी दीप्तिदेवनयोः (स 11	एध वृद्धौ (भ्वा. 2)
ईज गतिकुत्सनयोः (भ्वा. 110)	एजृ कम्पने (भ्वा. 143)
	एजृ दीप्तौ (भ्वा. 363)
किल श्वैत्ये (तु. 63)	केलृ चलने (भ्वा. 363)
कील बन्धने (भ्वा. 351)	
खिट त्रासे (भ्वा. 197)	खेट भक्षणे (चु. 297)
चिल निवसने (तु० 65)	चेलृ चलने (भ्वा. 363)
इ	ए
छिदिर् द्वैधीकरणे (रु03)	छेद छेदने (चु. 361)
जिषु सेचने (भ्वा. 465)	जेषृ गतौ (भ्वा 412)
णिदि कुत्सायाम् (भ्वा. 54)	
णिदृ कुत्सासन्निकर्षयोः (भ्वा. 612)	णेदृ कुत्सासन्नि कर्षयोः (भ्वा. 612)
तिज निशाने (भ्वा. 698)	तेज पालने (भ्वा. 140)
तिपृ क्षरणार्थः (भ्वा. 252)	तेपृ कम्पने च (भ्वा . 252)
दिवि प्रीणनार्थः (भ्वा. 392)	
दिवु क्रीडाविजिगीषा0 (दि.1)	
दिवु मर्दने (चि. 1963)	
दिवु परिकूजने (चु.175)	देवृ देवने (भ्वा. 336)
रिवि गत्यर्थः (भ्वा. 393	रेवृप्लवगतौ (भ्वा. 339)
रिष हिंसार्थः (भ्वा. 462)	रेषृ अव्यक्ते शब्दे (भ्वा. 413)

रिष हिंसायाम् (भ्वा.दि 120)

लिप उपदेहे (भ्वा.142)	लेपृ गतौ (भ्वा.258)
विथृ याचने (भ्वा.27)	वेथृ याचने (भ्वा.27)
विल क्षेपे (चु. 72)	वेल कालोपदेशे (चु. 305)
विल संवरणे (तु.68)	वेलृ चलने (भ्वा.367)
वी गतिप्रजनकान्त्य0 (अ. 41)	वेञ् तन्तुसन्तने (भ्वा.732)
शिल उञ्छे (तु. 72)	शेलृ गतौ (भ्वा..364)
षिवु तन्तु सन्ताने (दि02)	षेवृ सेचने (भ्वा. 337)
ष्टिपृ क्षरणार्थः (भ्वा. 252)	ष्टेपृ क्षरणार्थः (भ्वा. 252)
पिस गतौ (चु0 36)	
पिसि भाषार्थः (चु. 223)	
पिसृ गतौ ((भ्वा.476)	पेसृ गतौ (भ्वा. 476)
पील प्रतिष्टग्भे (भ्वा. 348)	पेलृगतौ (भ्वा. 364)
डुमिञ् प्रक्षेपणे (स्वा. 4)	मेङ् प्रणिदाने (भ्वा. 688)
मीञ् हिंसायाम् (क्र्या. 4)	
ञिमिदा स्नेहने (दि. 129)	मेदृ मेधाहिंसनयोः (भ्वा.609)
ञिमिदा स्नेहने (दि. 495)	
मिदि स्नेहने (चु. 8)	
मिदृ मेधाहिंसनयोः (भ्वा. 609)	
उ+ ओ	
उख, उखि गत्यर्थौ (भ्वा. 88)	ओखृ शोषणालमर्थयोः (भ्वा. 86)
ऊन परिहाणे (चु. 313)	ओणृ अपनयने (भ्वा. 305)
धूरी हिंसागत्याम् (दि. 44)	धोऋ गतिचातुर्योः (भ्वा. 372)
शुच शोके (दि. 54)	
षु प्रसवैश्वर्ययोः (अ. 34)	षो अन्तकर्मणि (दि. 38)
षु अभिषवे (स्वा. 1)	
षू प्रेरणे (तु. 117)	
षूङ् प्राणिगर्भविमोचने (अ. 24)	
षूङ् प्राणिप्रसवे (दि. 22)	
हुडि वरणे (भ्वा. 176)	होडृ गतौ (भ्वा. 244)
हुडि संद्याते (भ्वा. 168)	होडृ अनादरे (भ्वा. 183)
हुड गतौ (भ्वा. 244)	
ऋच स्तुतौ (तु. 19)	अर्चपूजायाम् (भ्वा. 129
ऋज गतिस्थानार्जनोपर्जनेषु (भ्वा. 107)	अर्ज अर्जने (भ्वा. 134)
गृज, शब्दार्थे (भ्वा. 152)	गर्ज शब्दे (भ्वा. 132)
गृह ग्रहणे (चु. 321)	गर्ज शब्दे (चु. 133)
गृहू ग्रहणे (भ्वा. 433)	गर्ह विनिन्दने (चु. 272)
उतृदिर् हिंसानाद्रयोः (रु.9)	तर्दहिंसायाम् (भ्वा. 47)
पृण प्रीणने (तु. 41)	पर्ण हरितभावे (मा.धा. चु. 324)
बृह वृद्धौ (भ्वा 488)	बर्ह प्रधान्ये (भ्वा. 425)
बृहिभाषार्थः (भ्वा. 490)	बर्ह हिंसायाम् (चु. 132)
बृहि शब्दे (भ्वा. 489)	
वृहि भाषार्थः (चु. 223)	वर्ह भाषार्थः चु. 223)
बृहू अद्यमने (तु. 58)	वर्ह परिभाषण हिंसा0 (भ्वा. 426)
वृण च (तु. 42)	वर्ण प्रेरणे (चु. 19)

वर्ण वर्णने (चु. 20)
वर्ण वर्णक्रियाविस्तार0 (चु. 365)
वृधृ भाषार्थः (चु. 223) वर्ध छेदनपूरणयोः (चु. 122) वृधु वृद्धौ (भ्वा. 409)
वृष शक्तिवन्धने (चु. 173) वर्ष स्नेहने (भ्वा. 408)
वृषु सेचने (भ्वा. 68)
स्वृ शब्दोपतापयोः (भ्वा. 666) स्वर आक्षेपे (चु. 288)

उक्त ध्वन्यात्मक परिवर्तन धातुओं से बनने वाली रूप संरचना में भी दृष्टिगत होता है। यथा-

धातु इ- ए	रुप
इख गत्यर्थः (भ्वा. 88)	एखति
इट गतौ (भ्वा. 212)	एटति
इल प्रेरण (चु. 129)	एलयटि
कि ज्ञाने (जु. 18)	चिकेति
किट त्रासे (भ्वा. 197)	केटति
किट गतौ (भ्वा. 212)	केटति
क्षि क्षये (भ्वा . 145)	क्षयति (ए-अय्)
खिट त्रासे (भ्वा 197)	खेटति
चिट परप्रैष्ये (भ्वा. 208)	चेटति
चित सञ्चेतन (चु. 144)	चेतयति
चिती संज्ञाने (भ्वा. 25)	चेतति
जि अभिभवे (भ्वा . 678)	जयति
जि जये (भ्वा 378)	जयति
जिषु सेचने (भ्वा. 465)	जेषति
डिप क्षेपे (चु. 142)	उेपयति
डिप संघते (चु 147)	डेपयति
णीञ् प्रापणे (भ्वा 642)	नयति
णेदृ कुत्सासन्निकर्षयोः (भ्वा. 612)	नेदति
तिज निशाने (भ्वा. 698)	तेजति
तिपृ क्षरणार्थः (भ्वा. 242)	तेपति
तिल गतौ (भ्वा. 361)	तेलति
तिल स्नेहने (चु. 74)	तेलयति
दिवु मर्दने (चु. 193)	देवयति
दिवु परिकूजने (चु. 175)	देवयति
धिष शब्दे (जु. 20)	दिधेष्टि
पिट शब्दसङ्घातयोः (भ्वा 204)	पेटति
पिठ हिंसासंक्लेंशन्योः (भ्वा . 230)	पेठति
पिस गतौ (चु. 36)	पेसयति
पिसृ गतौ (भ्वा. 476)	पेसति
बित आक्रोशे (भ्वा. 210)	बेटति
बिल भेदने (चु. 73)	बेलयति
भी भये ()जु. 2) विभेति	
ञिमिदा स्नेहने (दि. 129)	मेद्यति
मिदृ मेधाहिंसनयोः (भ्वा.210)	मेदति
विथृ याचने (भ्वा. 27) वेथति	
विद चेतनाख्याननिवासेपु (चु.177)	वेदयते
बिल भेदने (चु. 73)	बेलयति

विषु सेचने (भ्वा. 465)	वेषति
विष्लृ व्याप्तौ (ज. 13)	वेवेष्टि
शिट अनादरे (भ्वा. 198)	शेटति।
शिष असर्वोपयोगे (चु. 241)	शेषयति।
शिष हिंसार्थः (भ्वा.0 462)	शेषति।
श्रिञ सेवायाम् (भ्वा 638)	श्रयति।
श्रिषु दाहे (भ्वा. 467)	श्रेषति।
(टु ओ) शिव गतिवृद्धयोः (भ्वा. 736)	श्वयति
श्विता वर्णे (भ्वा 198)	श्वेतते।
षिधु गत्याम् (भ्वा.198)	सेधति।
षिधु गत्याम् (भ्वा 37)	षेधति
षिधु शासत्रे माङ्गल्ये च (भ्वा.0 38)	सेधति
ष्णिह स्नेहने (चु. 39)	सेधति
षिमड् ईष्द्धसने (भ्वा. 679)	स्मयते
ञिष्विदा स्नेहस्य मोचने च (भ्वा 496)	स्वेदते
स्मिट अनादरे (चु. 41)	स्मेटयति।
उ –	ओ
उख गत्यर्थः (भ्वा.)	ओखति
उङ् शब्दे ((भ्वा. 682)	अवते
उठ उपघाते (भ्वा. 228)	ओठति
उष दाहे (भ्वा 464)	ओषति
कुक आदाने (भ्वा. 72)	कोकते
कुङ् शब्दे (भ्वा. 72)	कवते (उ–ओ–अव)
कुच शब्दे तारे (भ्वा.112)	कोचति
कुजु स्तेयकरणे (भ्वा. 117)	कोजति
कुट इत्येके (चु. 167)	कोटयते
कुप भाषार्थः (चु. 223)	कोपयति
कुल संस्त्याने वन्धुषु च (भ्वा. 583)	कोलति
कुह विस्मापने (चु. 323)	कोहयते
क्रुश आह्वाने रोदने च (भ्वा. 595)	क्रोशति
क्लुङ् इत्येके (भ्वा. 685)	क्लवते
क्षुभ संचलने (भ्वा. 502)	क्षोभते
खुङ् शब्दे (भ्वा. 682)	खवते
खुजु स्तेय करणे (भ्वा. 117)	खोजति
गुङ् अव्यक्ते शब्दे (भ्वा. 119)	गवते
गुद क्रीडायामेव (भ्वा. 19)	गोदते
गुप गोपने (भ्वा. 697)	गोपते।
गुप भाषार्थः (चु. 223)	गोपयति।
गुपू रक्षणे (भ्वा. 297)	गोपति।
गुपू रक्षणे (भ्वा. 297)	गोपति।
गुहू संवरणे (भ्वा. 637)	गोहति।
ग्रुचु स्तेयकरणे (भ्वा. 117)	ग्रोचति।
ग्लुचु स्तेयकरणे (भ्वा. 117)	ग्लोचति।
घुङ् शब्दे (भवा 682);	घवते।
घुट परिवर्तन (भ्वा. 499)	घोटते।
घुण भ्रमणे (भ्वा. 297)	घोणते।

चुट छेदने (चु. 80)	चोटयति।
चुद सञ्चोदने (चु. 61)	चोदयति।
चुप मन्दायां गतौ (चु. 286)	चोपयति।
चुर स्तेये (चु. 1)	चोरयति।
चुल समुच्छ्राये (चु. 69)	चोलयति।
च्युङ् गतौ (भ्वा. 684)	च्यवते।
च्युतिर आसेचने (भ्वा. 33)	च्योतते।
जुड प्रेरणे (चु. 115)	जोडयति।
जुष परितर्कणे (चु. 261)	जोषयति।
तुज हिंसायाम् (भ्वा. 150)	तोजति।
तुज हिंसाबलादाननिकेतनेषु (चु. 35)	तोजयति।
तुडृ तोडने (भ्वा. 242)	तोडति।
तुप हिंसार्थः (भ्वा. 287)	तोपति।
तुफ हिंसार्थः (भ्वा. 287)	तोफति।
तुफ हिंसायाम् (भ्वा. 503)	तोभते।
तुर त्वरणे (जु. 19)	तुतोर्ति।
तुल उन्माने (चु. 66)	तोलयति।
तुस शब्दे (भ्वा. 472)	तोसति।
तुहिर् अर्दने (भ्वा. 491)	तोहति।
त्रुट छेदने (चु. 166)	त्रोटयति।
त्रुप हिंसार्थः (भ्वा. 287)	त्रोपति।
त्रुफ हिंसार्थः (भ्वा.287)	त्रोफति।
दु गतौ (भ्वा. 677)	दवति।
दुल उत्क्षेपे (चु. 67)	दोलयति।
दुह प्रपूरणे (अ. 4)	दोग्धि।
दुहिर् अर्दने (भ्वा. 491)	दोहति।
द्युत दीप्तौ (भ्वा. 493)	द्योतते।
द्रु गतौ (भ्वा. 677)	द्रवति।
पुट मर्दने (भ्वा.215)	पोटति।
पुघ भाषार्थः (चु. 223)	पोथयति
पुल महत्त्वे (भ्वा. 582)	पोलति।
पुष पुष्टौ (भ्वा. 466)	पोषति।
पुष धारणे (चु. 221)	पोषयति।
प्रुङ् गतौ (भ्वा. 467)	प्रोषते।
टलुङ् गतौ (भ्वा 684)	प्लवते।
बुध अवगमने (भ्वा. 597)	बोधति।
बुधिर् बोधने (भ्वा. 614)	बोधते।
बुल निमज्जने (चु. 71)	बोलयति।
भू सतायाम् (भ्वा. 1)	भवति।
मुच प्रमोचने (चु. 212)	निर्मोचयति।
मुज शब्दार्थः (भ्वा. 152)	मोजति।
मुट मर्दने (भ्वा. 215)	मोटति।
मुट संचूर्णने (चु. 81)	मोटयति।
मुद हर्षे (भ्वा. 15)	मोदते।
मुद संसर्गे (चु. 209)	मोदयते।
मूङ् बन्धने (भ्वा. 694)	मवते।

युछ प्रमादे (भ्वा 129)	योछति।
युज संयमने (भ्वा. 231)	योजयति।
युतृ भासने (भ्वा. 26)	योतते।
रुङ् गतिरेषणयोः (भ्वा. 686)	रवते।
रुच दीप्तावभिप्रीतो च (भ्वा. 498)	रोचते।
रुज हिंसायाम् (चु. 227)	रोजयति।
रुठ उपघ्राते (भ्वा. 462)	रोठति।
रुष हिंसार्थः (भ्वा. 462)	रोषति।
रुष रोषे (चु.140)	रोषयति।
रुह वीजजन्मतिनिप्रादुर्भावे (भ्वा. 598)	रोहति।
लुट उपघ्राते (भ्वा. 500)	लोटते।
लुट विलोडने (भ्वा. 207)	लोटति।
लुठ उपघ्राते (भ्वा. 228)	लोठति।
लुठ उपघाते (भ्वा. 500)	लोडते।
शुच शोके (भ्वा. 111)	शोचति।
शुठ प्रतिघाते (भ्वा. 232)	शोठति।
शुभ दीप्तौ (भ्वा. 501)	शोभते।
षु प्रसवैसययोः (भ्वा. 674)	सवति।
ष्तुच प्रसादे (भ्वा.106)	स्तोचते।
ष्टुभ स्तम्भे (भ्वा. 278)	स्तोभ्ते।
स्फुट विकसने (भ्वा. 169)	
स्फुट भेदने (चु.191) (	स्फोटयति।
स्रु गतौ (भ्वा. 244)	स्रवति।
हु दानादनयोः (जु.2)	जुहोति
हुडृ गतौ (भ्वा 584)	होडति।
ऋ - अर्	
ऋ गतिप्रपणयोः (भ्वा . 670)	अर्ता।
ऋ गतौ (जु. 16) इयर्ति।	
ऋज गतिस्थानार्जनोपार्जनेषु (भ्वा.107)	अर्जते।
कृषू विलेखने (भ्वा. 716)	कर्षति।
गृ सेचने (भ्वा. 671)	गरति।
गृज शब्दार्थः (भ्वा. 152)	गर्जति।
गृज ग्रहणे (भ्वा. 152)	गर्हति।
गृहू ग्रहणे (भ्वा. 433)	गर्हते।
घृ सेचन (भ्वा 671)	घरति।
घृ क्षरणहीर त्योः (जु. 14)	जिघर्ति।
घृषु संघर्षे (भ्वा 470)	घर्षति।
छृद सन्दीपने (चु. 213)	छर्दयति।
तृप तप्तौ (चु. 243)	तर्पयति।
तृ प्लवन संतरणयोः (भ्वा. 697)	तरति।
दृभी भये (चु. 246)	दर्भयति।
दृह वृद्धौ (भ्वा. 488)	दर्हति।
धृङ् अवध्वंसने (भ्वा 687)	धरते।
धृञ धारणे (भ्वा 641)	धरति।
धृष प्रसहने (चु. 277)	धर्षयति।
पृच संयमने (चु. 231)	पर्चयति।

पृष संचने (भ्वा. 468)	पर्षति।
पृ पलनपूरणयोः (जु. 4)	पिपर्ति।
बृह वृद्धौ (भ्वा. 488)	बर्हति।
भृजी भर्जने (भ्वा. 108)	भर्जते।
भृञ् भरणे (भ्वा 639)	भरति।
डुभृञ धारणपोषणयोः (जु. 5)	विभर्ति।
मृधु उन्दने (भ्वा. 613)	मर्धते।
मृष तितिक्षायाम् (चु. 0276)	मर्षयति।
मृषु सेचने सहने च (भ्वा. 468)	मर्षति।
वृ संवरणे (भ्वा. 668)	वरति।
वृतु वर्तने (भ्वा. 508)	वर्तते।
वृतु भाषार्थाः (चु. 223)	वर्तयते।
वृधु वर्धने (भ्वा. 409)	वर्धते।
वृक आदाने (भ्वा. 72)	वर्कते।
वृधु भाषार्थः (चु. 223)	वर्धयति।
वृष शक्तिवन्धने (चु. 173)	वर्षयति।
वृषु संचने (भ्वा. 468)	वर्षति।
शृधु (शब्दकुत्सायाम् (भ्वा 510)	शर्धते।
शृधु उन्दते (भ्वा.613)	शर्धति।
शृधु प्रसहने (चु. 202)	शर्धयति।
षृभु हिंसार्थः (भ्वा.293)	सर्भति।
सृ गतौ (भ्वा 669)	सरति।
सृप्लृ गतौ (भ्वा. 709)	सर्पति।
स्मृ आध्याने (भ्वा. 547)	स्मरति।
स्मृ चिन्तायाम् (भ्वा. 667)	समरति।
हृञ् हरणे (भ्वा. 640)	हरति।
हृषु अलीके (भ्वा. 471)	हर्षति।